केन्द्रीय विद्यालय संगठन
[आगरा संभाग]
संत्रात परीक्षा 2018–19
विषय : हिन्दी–अ
कक्षा–9
(हल प्रश्न–पत्र)

समय : 3 घण्टे] **[पूर्णांक : 80 अंक**

विद्यार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

(1) प्रस्तुत प्रश्न–पत्र चार खण्डों में विभाजित है– **क, ख, ग** और **घ**।

(2) प्रश्न पत्र के चारों खण्डों का उत्तर देना **अनिवार्य** है।

(3) विद्यार्थी यथासंभव प्रत्येक खण्ड का उत्तर क्रमशः दें।

खण्ड–'क'

अपठित बोध **(15 अंक)**

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिये गए प्रश्नो के सही उत्तर लिखिए– **8**

प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपतराय था। वे नवाबराय नाम से उर्दू में लिखते थे। उनकी 'सोजे–वतन' कहानी–संग्रह की सभी प्रतियाँ तत्कालीन अंग्रेजी सरकार ने जब्त कर ली थी। सरकारी कोप से बचने के लिए उर्दू अखबार जमाना के संपादक मुंशी दयानारायण निगम ने उन्हें नवाबराय के स्थान पर 'प्रेमचंद' उपनाम सुझाया। यह नाम उन्हे इतना पसंद आया कि नवाबराय के स्थान पर प्रेमचंद हो गए। हिन्दी पुस्तक एजेंसी की एक प्रेस कलकत्ता में थी जिसका नाम वणिक प्रेस था। इसके मुद्रक थे 'महावीर प्रसाद पोद्दार'। वे प्रेमचंद की रचनाएँ बंगला के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार शरत बाबू को पढ़ने के लिए दिया करते थे। एक दिन पोद्दार जी शरत बाबू के घर गए। वहाँ उन्होने देखा कि शरत बाबू प्रेमचंद का कोई उपन्यास पढ़ रहे थे जो बीच में खुला हुआ था। पोद्दार जी ने उसे उठाकर देखा तो उपन्यास के एक पृष्ठ पर शरत बाबू ने उपन्यास सम्राट लिख रखा है। बस यहीं से पोद्दार जी ने प्रेमचंद को उपन्यास सम्राट प्रेमचंद लिखना शुरू दिया।

1. प्रेमचंद का वास्तविक नाम क्या था? वे किस नाम से लिखते थे? **2**
2. प्रेमचंद की कौन सी पुस्तक किसने और क्यों जब्त कर ली थी? **2**
3. प्रेमचंद नाम उन्हे कैसे मिला? **2**
4. प्रेमचंद को उपन्यास सम्राट नाम किसने दिया? **1**
5. गदयांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए। **1**

2. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यान पूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए। **7**

''सच हम नहीं, सच तुम नहीं
सच है महज संघर्ष ही
संघर्ष से हटकर जिए तो क्या जिए हम या कि तुम।
जो नत हुआ वह मृत हुआ ज्यों वृंत से झरकर कुसुम।
जो लक्ष्य भूल रुका नहीं।
जो हार देख झुका नहीं।
जिसने प्रणय पाथेय माना जीत उसकी ही रही।
सच हम नहीं, सच तुम नहीं।
ऐसा करो जिससे न प्राणों में कहीं जड़ता रहे।

To know about more useful books for class-9 click here

जो है जहाँ चुपचाप अपने आप-से लड़ता रहे।
जो भी परिस्थितियाँ मिलें
काँटे चुभे, कलियाँ खिलें।
हारे नहीं इंसान, संदेश जीवन का यही।

प्रश्न–

(i) काव्यांश के आधार पर 'सच' का अर्थ स्पष्ट कीजिये। **(2 अंक)**

(ii) जो है जहाँ चुपचाप अपने आप-से लड़ता रहे'-पंक्ति में अपने आप से लड़ने का क्या तात्पर्य है? **(2 अंक)**

(iii) 'काँटे' और 'कलियाँ' किसका प्रतीक है? **(1 अंक)**

(iv) 'जिसने प्रणय-पाथेय माना जीत उसकी ही रही'-में कौनसा अलंकार है? **(1 अंक)**

(v) काव्यांश में प्रयुक्त शब्द 'वृंत' का क्या अर्थ है? **(1 अंक)**

खण्ड–'ख'

(व्यावहारिक व्याकरण) **(15 अंक)**

3. (i) निम्न प्रश्नों का निर्देशानुसार उत्तर दीजिए। **4**

(क) 'अभिप्राय' शब्द में प्रयुक्त उपसर्ग एवं मूल शब्द लिखिए।

(ख) 'अप' उपसर्ग लगाकर एक शब्द बनाइए।

(ग) 'टहलना' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय और मूल शब्द लिखिए।

(घ) 'इक' प्रत्यय लगाकर एक शब्द बनाइए।

4. नीचे दिये गए सभी पदों का विग्रह करके समास का नामोल्लेख कीजिये– **3**

(क) देश-विदेश

(ख) चतुर्भुज

(ग) भारतरत्न

5. निम्नलिखित वाक्यों का अर्थ के आधार पर पहचान करके भेद लिखिए– **2**

(क) लता तुम गाना सुनाओ।

(ख) क्या राकेश आ गया?

(ii) निम्नलिखित वाक्यों को निर्देशानुसार बदलिए– **2**

(क) मनोरमा कविता बैठकर पढ़ती है। (संदेहवाचक)

(ख) मनोज मुझसे डरता है। (प्रश्नवाचक)

6. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों की पहचान करके उनके नाम लिखिए– **4**

(क) मेघ आए बड़े, बन-ठन के सँवर के।'

(ख) मैया, मैं तो चन्द्र-खिलौना लैहौं।

(ग) हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी।

(घ) कनक-कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।

खण्ड–'ग'

(पाठ्य-पुस्तक एवं पूरक पाठ्य-पुस्तक) **(30 अंक)**

7. नीचे गए गए गद्यांश को पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिये– **2 + 2 + 1 = 5**

मैना उसके मुख की ओर देखकर आर्त्त स्वर में बोली,-''मुझे कुछ समय दीजिए, जिससे आज मैं यहाँ जी भरकर रो लूँ।'' पर पाषाण हृदय वाले जनरल ने उसकी अंतिम इच्छा भी पूरी नहीं होने दी। उसी समय मैना के हाथ में हथकड़ी पड़ी और वह कानपुर के किले में लाकर कैद कर दी गई।

प्रश्न–

(1) मैना को किस प्रकार मार डाला गया? **2**

(2) मैना ने कौन-सी इच्छा प्रकट की? **2**

(3) उपयुक्त गद्यांश के पाठ तथा लेखक का नाम लिखिए? **1**

To know about more useful books for class-9 click here

अथवा

''उस मैना को क्या हो गया है, यही सोचता हूँ। क्यों वह दल से अलग अकेली रहती है?'' पहले दिन देखा था सेमर के पेड़ के नीचे मेरे बगीचे में। जान पड़ा जैसे एक पैर से लँगड़ा रही हो। इसके बाद उसे रोज सवेरे देखता हूँ- संगीहीन होकर कीड़ों का शिकार करती फिरती है। चढ जाती है बरामदे में। नाच-नाचकर चहलकदमी किया करती है, मुझसे जरा भी नहीं डरती। क्यों है ऐसी दशा इसकी? समाज के किस दंड पर उसे निर्वासन मिला है, दल के किस अविचार पर उसने मान किया है? कुछ ही दूरी पर और मैनाएँ बक-बक कर रही है, घास पर उछल-कूद रही हैं, उड़ती फिरती हैं शिरीषवृक्ष की शाखाओं पर। इस बेचारी को ऐसा कुछ भी शौक नहीं है। इसके जीवन में कहाँ गाँठ पड़ी है, यही सोच रहा हूँ। सवेरे की धूप में मानो सहज मन से आहार चुगती हुई झड़े हुए पत्तों पर कूदती फिरती है सारा दिन। किसी के ऊपर इसका कुछ अभियोग है, यह बात बिलकुल नहीं जान पड़ती। इसकी चाल में वैराग्य का गर्व भी तो नहीं है, दो आग-सी जलती आँखें भी तो नहीं दिखती ।

प्रश्न—

(1) उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर रवीन्द्रनाथ टैगोर के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए। **2**

(2) लँगड़ी मैना को अकेले फुदकते देखकर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने क्या-क्या कल्पनाएँ कीं? **2**

(3) कुछ दूरी पर दूसरी मैनाएँ क्या कर रही थी? **1**

8. नीचे गए गए प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में दीजिए— **2 × 4 = 08**

(i) लेखक ने प्रेमचंद को 'जनता के लेखक' क्यों कहा?

(ii) किस घटना ने सालिम अली के जीवन की दिशा को बदल दिया और उन्हें पक्षी-प्रेमी बना दिया?

(iii) 'बेगम साहिबा खुले दिल की औरत थी। ''मेरे बचपन के दिन' नामक पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिये।

(iv) अत्यधिक विज्ञापनों का होना चिंता का विषय क्यों है? 'उपभोक्तावाद की संस्कृति' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिये।

9. नीचे गए गए पद्यांश को पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर दीजिए— **2 + 2 + 1 = 5**

क्या अंतरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें
क्या दीमकों ने खा लिया है
सारी रंग-बिरंगी किताबों को
क्या काले पहाड़ के नीचे दाब गए हैं सारे खिलौने
क्या किसी भूकंप में ढह गई हैं
सारे मदरसों की इमारतें
क्या सारे मैदान सारे बगीचे और घरों के आँगन
खत्म हो गए हैं एकाएक

प्रश्न—

(1) उपर्युक्त पद्यांश का आशय स्पष्ट कीजिए। **2**

(2) कवि गेंदों के खत्म होने का प्रश्न उठाकर क्या कहना चाहता है? **2**

(3) कवि मैदान, बगीचे और आँगन किसके लिए चाहता है? **1**

अथवा

क्षितिज अटारी गहराई दामिनि दमकी,
क्षमा करो गाँठ खुल गई अब भरम की,
बाँध टूटा झर-झर मिलन के अश्रु ढरके।
मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

प्रश्न—

(1) उपर्युक्त पद्यांश का आशय स्पष्ट कीजिए। **2**

(2) 'क्षितिज अटारी गहराई'-का आशय स्पष्ट कीजिए? **2**

(3) किस-किसका मिलन हुआ, जिसमें दोनों ओर से आँसू ढरके? **1**

To know about more useful books for class-9 click here

10. नीचे गए गए प्रश्नों का उत्तर संक्षेप में दीजिए— **(2 × 4 = 08 अंक)**

(i) कवि रसखान ने ब्रजभूमि के प्रति अपने प्रेम को किस प्रकार प्रकट किया है?

(ii) माँ ने अपने पुत्र को क्या चेतावनी दी थी? और क्यों? यमराज की दिशा नामक पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए?

(iii) 'चंद्र गहना से लौटती बेर' नामक पाठ में कवि ने गाँव और नगर के जीवन में क्या अंतर दिखाया है?

(iv) मनुष्य ईश्वर को कहाँ-कहाँ खोजता रहता है?

11. 'टिहरी बाँध पुनर्वास के साहब और माटी वाली वृद्ध महिला के मध्य हुए बातचीत इस प्रकार की बाँध योजनाओं पर कैसे प्रश्न चिन्ह लगाती है? समझाइए। **4**

अथवा

रामस्वरूप और गोपाल प्रसाद बात-बात पर 'एक हमारा जमाना था' कहकर अपने समय की तुलना वर्तमान समय से करते हैं। इस प्रकार की तुलना करना कहाँ तक तर्कसंगत है? **4**

खण्ड–'घ'

(लेखन) **(20 अंक)**

12. दिए गए संकेत बिन्दुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 200 से 250 शब्दों में निबन्ध लिखिए : **10**

आतंकवाद : एक चुनौती

1. भूमिका
2. आतंकवादी विश्व्यापी समस्या
3. आतंकवाद की नर्सरी
4. भारत में आतंकी विस्तार
5. समाप्ति के उपाय
6. उपसंहार

अथवा

बेरोजगारी की समस्या और समाधान

1. भूमिका
2. बेरोजगारी के कारण
3. बेरोजगारी के परिणाम
4. बेरोजगारी दूर करने के उपाय
5. उपसंहार

अथवा

वन बचाओ : सुख-समृद्धि लाओ

1. भूमिका
2. वनों से लाभ
3. वन-विनाश का परिणाम
4. जंगलों की रक्षा के उपाय
5. उपसंहार

13. आपके क्षेत्र में अनाधिकृत मकान बनाए जा रहे हैं। इसकी रोकथाम के लिए जिलाधिकारी को पत्र लिखिए। 5

अथवा

अपने नगर में व्याप्त बिजली कटौती से उत्पन्न समस्याओं का उल्लेख करते हुए किसी लोकप्रिय दैनिक समाचार के संपादक को पत्र लिखिए।

14. नोटबंदी से प्रभावित दो ग्रामीणों का संवाद लिखिए। 5

अथवा

विद्यालय में स्वच्छता अभियान को लेकर दो मित्रों का संवाद लिखिए।

●●

OSWAAL BOOKS LEARNING MADE SIMPLE

To know about more useful books for class-9 click here

उत्तरमाला

खण्ड–क

(अपठित बोध एवं मुक्त पाठ)

उत्तर 1.

1. प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपत राय था। वे नवाबराय के नाम से उर्दू में लिखते थे। बाद में वे सरकारी कोप से बचने के लिए प्रेमचंद के नाम से लिखने लगे और इसी नाम से सुप्रसिद्ध हो गए।
2. प्रेमचंद की 'सोजे-वतन' नामक पुस्तक अंग्रेज सरकार ने जब्त कर ली थी। सरकार को भय था कि लोग इसे पढ़कर विद्रोह कर देंगे।
3. प्रेमचंद को प्रेमचंद नाम उर्दू अखबार को संपादक दयानारायण निगम के द्वार दिया गया। बाद में वे इसी नाम से जाना जाने लगे।
4. प्रेमचंद को उपन्यास सम्राट नाम शरत बाबू के द्वारा दिया गया। बाद में श्री महावीर प्रसाद पोद्दार ने उन्हें इसी नाम से लिखना शुरू कर दिया।
5. गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक 'उपन्यास सम्राट प्रेमचंद' होना चाहिए।

उत्तर 2.

1. काव्यांश के अनुसार जीवन का संघर्ष ही सच है। सभी विघ्न-बाधाओं को पारकर जो अपने लक्ष्य को पा लेता है यही सच है।
2. 'जो है जहाँ चुपचाप अपने आप-से लड़ता रहे।' इस पंक्ति में आप-से लड़ने का तात्पर्य प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए अनवरत संघर्षशील रहने से है।
3. प्रस्तुत काव्यांश में 'काँटे' संघर्ष या दुख का और 'कलियाँ' आराम या सुख का प्रतीक है।
4. 'जिसने प्रणय-पाथेय माना जीत उसकी ही रही'- इस पंक्ति में रूपक और अनुप्रास अलंकार।
5. काव्यांश में प्रयुक्त वृंत शब्द का अर्थ 'डाली' है।

खण्ड–ख

(व्यावहारिक व्याकरण)

उत्तर 3.

(क) उपसर्ग – अभि, मूल शब्द – प्राय
(ख) अप + मान – अपमान
(ग) मूल शब्द – टहल, प्रत्यय – ना
(घ) नगर + इक – नागरिक

उत्तर 4.

(क) देश और विदेश – द्वंद्व समास
(ख) चार हैं भुजाएँ जिनकी – बहुव्रीहि समास
(ग) भारत का रत्न – तत्पुरुष समास

उत्तर 5.

(1) (क) विधानवाचक वाक्य (ख) प्रश्नवाचक वाक्य

(2) (क) शायद मनोरमा कविता बैठकर पढ़ती है।
(ख) क्या मनोज मुझसे डरता है?

उत्तर 6.

(क) मानवीकरण (ख) रूपक
(ग) उपमा (घ) अनुप्रास

To know about more useful books for class-9 click here

खण्ड–ग

(पाठ्य-पुस्तक)

उत्तर 7.

1. मैना बड़ी ही बर्बरता पूर्वक मार दी गई। उसे अंग्रेज़ी सेना का जनरल आउटरम निर्दयता से जलाकर मार डाला।
2. मैना ने उस पाषाण हृदय आउटरम के सामने अपने भवन के खंडहर पर जी भरकर रोने की इच्छा प्रकट की।
3. उपर्युक्त गद्यांश के पाठ का नाम – 'नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया' तथा लेखक का नाम 'चपला देवी' है।

अथवा

1. उपर्युक्त गद्यांश के आधार पर पता चलता है कि रवीन्द्रनाथ प्रकृति और पशु-पक्षी प्रेमी थे। वे एक संवेदनशील व्यक्ति थे। संवेदनशील होने के साथ वे एक सहृदह कवि और चिंतक भी थे जिसका प्रमाण उनके द्वारा लँगड़ी मैना को आधार मानकर दी गई अभिव्यक्ति है।
2. रवीन्द्रनाथ टैगोर संवेदनशील व्यक्ति थे। लँगड़ी मैना को देख उनके मन में अनेक प्रकार की कल्पनाएँ उठने लगीं। वे सोचने लगे कि शायद इसे किसी प्रकार का सामाजिक निर्वासन मिला हो या इसके मन में किसी प्रकार के दर्द की गाँठ पड़ गई हो जिससे यह अकेले जीवन बिता रही है।
3. कुछ ही दूरी पर मैनाएँ शिरीषवृक्ष की शाखाओं पर उछल-कूद करती हुई बक-बक कर रही थीं।

उत्तर 8.

1. प्रेमचंद जनता के प्रतिनिधि लेखक थे। उनकी लेखनी में जनता को स्वर मिला है। प्रेमचंद के व्यक्तित्व में आडंबर नहीं था। वे जैसा दिखते थे वैसा ही लिखते थे। वे ग्राम्यजीवन की सच्चाई का वर्णन करने में कुशल थे, यही कारण है कि उनके सभी पात्र गाँव के बीच से होते थे। अत: लेखक द्वारा प्रेमचंद को 'जनता के लेखक' कहा जाना समीचीन है।
2. बचपन की एक घटना ने सालिम को प्रसद्धि पक्षी-प्रेमी बना दिया। एक बार बचपन में सालिम अली की एयरगन से एक गौरैया घायल होकर गिर पड़ी। इस घटना से सालिम अली के जीवन की दिशा बदल गई। नैचुरल हिस्ट्री सोसायटी (बी.एन.एच.एस) की सहायता से उन्हें गौरैया की पूरी जानकारी मिली। वे गौरैया की देखभाल, सुरक्षा खोजबीन में जुट गए। इससे उनकी रुचि पूरे पक्षी-संसार की ओर मुड़ गई। वे पक्षी-प्रेमी बन गए।
3. बेगम साहिबा खुले दिल की औरत थी। उसके विचार धर्म और संप्रदाय से ऊपर उठकर थे। वह रक्षा-बंधन के त्योहार को खुलकर मनाती थी तथा मुहर्रम और ईद में सबको शामिल करती थी। बेगम साहिबा अपने को ताई साहिबा कहलाना पसंद करती थी।

उत्तर 9.

1. उपर्युक्त पद्यांश में बाल-शोषण की समस्या को उठाया गया है। छोटे-छोटे बच्चे अपनी खेलने और पढ़ने की उम्र में परिवार का खर्चा उठाने के लिए काम करने के लिए मजबूर हैं। इस स्थिति को देखकर कवि सोचता है कि क्या बच्चों के खेलने और पढ़ने के सभी साधन अचानक समाप्त हो गए हैं।
2. कवि गेंद के खत्म होने का प्रश्न उठाकर कहना चाहता है कि बाल मजदूरों की अभी खेलने की आयु है। अभी से काम-काज नहीं करना चाहिए। वह समाज को जागरूक करना चाहता है ताकि इन बच्चों के बचपन को लौटाया जाए।
3. कवि मैदान, बगीचे और आँगन बच्चों के खेलने के लिए चाहता है।

अथवा

1. उपर्युक्त पद्यांश का आशय है कि मेघ के स्वागत में अटारियों पर दामिनि रूपी महिलाएँ खड़ी हो गई हैं। और अब भ्रम का जाल फट चुका है, घनघोर वर्षा शुरू होने लगी है। ऐसा लगता है मानो धरती के मिलन के आँसू झरने लगे हों।
2. क्षितिज रूपी अटारी पर दामिनि रूपी महिलाएँ स्वागत के लिए एकत्रित हो गई हों।
3. आकाश और धरा का मिलन हुआ।

उत्तर 10.

1. कवि रसखान का ब्रजभूमि के प्रति प्रेम अनेक रूपों में प्रकट हुआ है:
   (क) कवि मनुष्य के रूप में ब्रजभूमि में जन्म लेकर वहाँ के ग्वालों के साथ रहना चाहता है।
   (ख) पशु (गाय) के रूप में ब्रजभूमि में जन्म लेकर कवि नन्द बाबा की गायों के बीच विचरण करना चाहता है।
   (ग) कवि पक्षी के रूप में भी ब्रजभूमि में जन्म लेकर यमुना के किनारे कदंब के पेड़ पर निवास करना चाहता है।
   (घ) कवि पत्थर के रूप में भी गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनना चाहता है।
2. माँ ने अपने पुत्र को चेतावनी दी थी कि दक्षिण दिशा यमराज की दिशा है। उधर पैर करके नहीं सोना चाहिए। इससे यमराज क्रुद्ध हो जाते हैं और मृत्यु भी हो सकती है।
3. 'चंद्र गहना से लौटती बेर' नामक कविता में गाँव और नगर के जीवन में अनेक अंतर को दिखाया गया है। नगरों में भावनाओं पर व्यापारिक एवं आर्थिक स्थितियाँ हावी हो जाती हैं। गाँव में अभी भी भावनाओं की निश्चलता पाई जाती है। इसीलिए प्रेम की व्यापकता में

To know about more useful books for class-9 click here

वहाँ स्वार्थ नहीं होता। नगरों में शोर-शराबा बहुत अधिक है। वहाँ मन को शान्ति नहीं मिलती है, भाग-दौड़ अधिक है। ग्रामीण वातावरण में स्वच्छन्दता है और प्रेम की अधिकता है। लोगों की भीड़ यहाँ नहीं है।

4. कबीर को अनुसार हिन्दू अपने ईश्वर को मंदिर तथा पवित्र तीर्थ स्थलों में ढूँढ़ता है तो मुस्लिम अपने अल्लाह को कावे या मस्जिद में ढूँढ़ता रहता है। कुछ मनुष्य ईश्वर को योग, वैराग्य तथा अनेक प्रकार की धार्मिक क्रिया-कलापों में खोजता रहता है।

उत्तर 11.

टिहरी बाँध पुनर्वास के साहब और माटी वाली वृद्ध महिला के मध्य हुई बातचीत इस प्रकार की बाँध योजनाओं पर विस्थापन की समस्या के कारण बहुत बड़ा प्रश्नचिह्न लगाती है। टिहरी बाँध बनाने में हजारों को रोजगार, खेत, घर, नौकरी, मजदूरी से हाथ धोना पड़ा। उनके सामने रोजगार और घर की समस्या उत्पन्न हो गई है। विस्थापितों के लिए केवल सरकार का ही नहीं, हम भारतवासियों का सहयोग अनिवार्य है तभी इस प्रकार की योजनाएँ सफल हो सकेंगी।

अथवा

रामस्वरूप ओर गोपाल प्रसाद का अपने समय की तुलना वर्तमान समय से करना बिल्कुल तर्कसंगत नहीं है क्योंकि सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक या अन्य क्षेत्रों में आए बदलाव समय सापेक्ष ही होते हैं। ऐसे में "एक हमारा जमाना था" कहकर अपने जमाने को श्रेष्ठ साबित करना और वर्तमान को अनुचित कहना परोक्ष रूप से वर्तमान पीढ़ी को अपमानित करना है क्योंकि हर एक समय अपनी उस समय की परिस्तिथियों के अनुसार सही होता है। इस प्रकार ऐसी तुलना अव्यवहारिक और अपरिपक्वता का परिचायक है।

खण्ड–घ

उत्तर 12. **आतंकवाद : एक चुनौती**

आतंकवाद का शाब्दिक अर्थ है—भय अथवा दहशत अर्थात किसी व्यक्ति, समुदाय अथवा राष्ट्र के द्वारा अपनी स्वार्थ-सिद्धि अथवा निहित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए की जाने वाली हिंसात्मक, राष्ट्र—विरोधी एवं गैरकानूनी गतिविधियों को आतंकवाद कहते हैं।

आज पूरा विश्व आतंकवाद की भयावह समस्या से जूह रहा है। विश्व में कई संगठन आतंकवादी गतिविधियों के अंजाम दे रहे हैं। आतंकवादियों का एक ही उद्देश्य होता है, हिंसा के माध्यम से लोगों को भयभीत करना एवं विश्व की शांति भंग करना। सबसे बड़ा आतंकी हमला 11 सितम्बर, 2001 को अमेरिका पर हुआ जिसने सम्पूर्ण विश्व को हिलाकर रख दिया। हजारों व्यक्ति पलक झपकते ही काल का ग्रास बन गए। कुछ देश आतंकवाद की नर्सरी के रूप में विकसित हो रहे हैं। आज रूस, बांग्लादेश, अफगानिस्तान,भारत एवं पाकिस्तान आदि देश आतंकवाद की समस्या से जूझ रहे हैं।

स्वतन्त्रता के बाद भारत में आतंकवाद के अनेक चेहरे उभर कर आए हैं। कभी वह क्षेत्रवाद के रूप में उभरा है तो कभी भाषावाद के रूप में। पूर्व में पंजाब में यह आग भयंकर रूप में उभरी थी। जम्मू-कश्मीर में तो इसकी गतिविधियाँ चरम पर हैं। आसाम, नागालैण्ड आदि आतंकवाद के साए में जी रहे हैं। भारत में सबसे भयंकर आतंकी हमला दिनांक 26.11.2008 को हुआ था। जब कुछ आतंकियों ने कुछ ही घण्टों में पूरी मुम्बई को अपने कब्जे में कर लिया था। 13 दिसम्बर, 2001 को भारत की संसद पर आतंकी हमला एक तरह से हमारे देश को खुली चुनौती थी।

भारत में आतंकवाद की वर्तमान समस्या के लिए प्रमुख रूप से हमारी राजनीतिक नीतियाँ ही दोषी हैं। 1947 से आज तक हमारे राजनेता देश को एक सूत्र में नहीं बाँध पाए, उन्होंने वोट के लालच में जाति, सम्प्रदाय, धर्म, भाषा, क्षेत्रीयता आदि के जो बीज बोए थे वे आज पेड़ बनकर खड़े हैं। बढ़ती हुई बेरोजगारी एवं धार्मिक उन्माद ने भी आतंकवाद को बढ़ाने में अहम भूमिका निभाई है। जम्मू-कश्मीर के पाकिस्तान समर्थक आतंकवाद से आज सारा देश त्रस्त है।

सरकार ने आतंकवादियों के विरूद्ध कार्यवाही के लिए टाडा कानून बनाया है। सीमा पर कंटीले तार लगाए गए हैं। जाँबाज सैनिक और अर्धसैनिक बल निरन्तर सीमा की रखवाली कर रहे हैं। आतंक की समस्या से राष्ट्रीय नेतृत्व और राष्ट्रवासियों को दृढ़ता से निपटना होगा। समय आ गया है कि हम आतंकवाद को खाद-पानी देने वाली समस्याओं को भी समूल नष्ट करने के विषय में ठोस कदम उठाएँ एवं आर-पार की लड़ाई लड़ें, केवल मोमबत्ती जलाकर इस समस्या से छुटकारा नहीं हो सकता।

बेरोजगारी की समस्या और समाधान

स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद से ही हमारे देश को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा है। इनमें से कुछ समस्याओं का तो समाधान कर लिया गया है किंतु कुछ समस्याएँ निरंतर विकट रूप लेती जा रही हैं। वह बेरोजगारी की समस्या है। हमारे यहाँ लगभग 50 लाख व्यक्ति प्रति वर्ष बेरोजगारी की पंक्ति में खड़े हो जाते हैं। हमें शीघ्र ही ऐसे उपाय करने होंगे जिससे इस समस्या की तीव्रगति को रोका जा सके।

हमारे देश में बेरोजगारी की इस भीषण समस्या के अनेक कारण हैं। उन कारणों में लॉर्ड मैकॉले की दोषपूर्ण शिक्षा पद्धति, जनसंख्या की अतिशय वृद्धि, बड़े-बड़े उद्योगों की स्थापना के कारण कुटीर उद्योगों का ह्रास आदि प्रमुख हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में रोजगारोन्मुख शिक्षा व्यवस्था का सर्वथा अभाव है। इस कारण आधुनिक शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों के सम्मुख भटकाव के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं रह गया है। बेरोजगारी की विकराल समस्या के समाधान के लिए कुछ राहें तो खोजनी ही पड़ेंगी। इस समस्या के समाधान के लिए गंभीर प्रयास किए जाने चाहिए।

To know about more useful books for class-9 click here

उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त अन्य कारण भी हैं जो बेरोजगारी की समस्या को उत्पन्न करते हैं, जैसे शिक्षा के स्तर में निरन्तर ह्रास होने के कारण स्कूल, कॉलेज अधिक मात्रा में खुलते जा रहे हैं। परिणामस्वरूप शिक्षा प्राप्त कर युवक रोजगार की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यहाँ व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा प्रणाली का अभाव है।

पंचवर्षीय योजनाओं में भी बेरोजगारी को दूर करने के लिये पर्याप्त मात्रा में प्रावधन किये जाते हैं, अनेक योजनाएँ बनाई जाती हैं किन्तु उनमें कई दोष विद्यमान होते हैं। देश में प्राकृतिक साधन एवं मानव शक्ति का सम्यक नियोजन न कर पाना भी बेरोजगारी को जन्म देता है।

इस समस्या के निराकरण हेतु हमें विविध उपाय को अपनाना होगा जिससे कि ग्रामीण एवं शहरी बेरोजगारी को दूर किया जा सके। बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के लिए सरकार को प्राकृतिक साधनों और भण्डारों की खोज करनी चाहिए और उन सम्भावनाओं का पता लगाना चाहिए जिनसे नवीन उद्योग स्थापित किये जा सके। गाँवों में बिजली की सुविधाएँ प्रदान की जाएँ, जिससे वहाँ छोटे-छोटे लघु उद्योग पनप सके।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि जन्म—दर में कमी करके, शिक्षा का व्यवसायीकरण करके तथा देश के स्वायत्तशासी ढाँचे और लघु उद्योग-धन्धों के प्रोत्साहन से ही बेरोजगारी की समस्या का स्थायी समाधान सम्भव है। जब तक इस समस्या का उचित समाधान नहीं होगा, तब तक समाज में न तो सुख-शान्ति रहेगी और न राष्ट्र का व्यवस्थित एवं अनुशासित ढाँचा खड़ा हो सकेगा। अत: इस दिशा में प्रयत्न कर रोजगार बढ़ाने के स्रोत खोजे जाने चाहिए क्योंकि आर्थिक दृष्टि से सुदृढ़ नागरिक ही एक प्रगतिशील राष्ट्र के निर्माणकर्त्ता होते हैं।

वन बचाओ: सुख-समृद्धि लाओ

वन प्रकृति की अनमोल संपदा है। मनुष्य ने प्रकृति की गोद में ही अपने विकास की यात्रा का रथ चलाया था। मनुष्य एवं प्रकृति का अटूट सम्बन्ध है। ईश्वरीय सृष्टि की अलौकिक रचना प्रकृति की गोद में ही मनुष्य ने आँखें खोली हैं एवं प्रकृति ने ही मनुष्य का पालन-पोषण किया है। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन वन-संपदा पर आश्रित रहा है। वन की लकड़ी विभिन्न रूपों में मनुष्य के काम आती है। वनों से हमें फल-फूल, जड़ी-बूटियाँ, औषधियाँ आदि प्राप्त होती हैं। शद्ध वायु एवं तपती दोपहर में छाया वृक्षों से ही प्राप्त होती है। वृक्ष वर्षा में सहायक होते हैं एवं भूमि को उर्वरक बनाते हैं। वे प्रदूषण को समाप्त कर हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।

वन बाढ़-सूखा एवं मिट्टी के कटान आदि प्राकृतिक आपदाओं से हमारी रक्षा करते हैं। हमारी संस्कृति में वृक्षों को देवता मानकर उनकी पूजा की जाती है। होली, दीपावली, बसंत पंचमी, पोंगल, बैसाखी आदि उत्सव मनाकर हम प्रकृति का स्वागत करते हैं।

यदि मनुष्य जाति को बचाना है तो वनों को बचाना होगा अर्थात हमें वृक्षरोपण करना होगा। इसीलिए एक बच्चा एक पेड़ का नारा दिया है। भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय वन नीति के अन्तर्गत 50 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में वृक्षारोपण का लक्ष्य रखा गया है। भारत में वन के कटाव से 3 लाख हेक्टेयर वन्य क्षेत्र की कमी आई है। वनों की 50 मीटर की एक कतार वाहनों के शोर को 30–50 डेसीवल तक कम करती है। इसी तरह चौड़ी पत्ती वाले पेड़ वातावरण में उड़ रही धूल को रोकते एवं वायु को शुद्ध करते हैं। किसानों द्वारा बोई गई फसलों के साथ क्रमबद्ध तरीके से उसी भूमि पर वृक्षों का लगाना कृषिवानिकी का रूप है। इसका उद्देश्य पशुओं के लिए हरा चारा तथा खाना बनाने के लिए ईधन उपलब्ध कराना है।

वन विहीन क्षेत्रों को ढँकने के लिए घने और तेजी से बढ़ने वाले वृक्षों का चुनाव करना चाहिए। वृक्षों के अतिरिक्त झाड़ियों वाले पौधों एवं घास को लगाना चाहिए जिससे भू-क्षरण रूके। हरे चारे वाले वृक्षों एवं पौधों को लगाना चाहिए। तेजी से बढ़ती जनसंख्या एवं तेजी से बढ़ती औद्योगिक इकाइयाँ, मशीनीकरण एवं शहरीकरण के कारण जो वनों का तीव्र गति से विनाश हुआ है उससे समस्त विश्व चिंतित है। वनसंरक्षण का उद्देश्य केवल वृक्षों को लगाना ही नहीं वरन वृक्षारोपण करने के बाद उनकी उचित देखभाल भी आवश्यक है। निजी क्षेत्र में स्वयंसेवी युवकों का संगठन बनाकर वनसंरक्षण का कार्य करना चाहिए। इस प्रकार धरती पुन: प्राकृतिक दृष्टि से समृद्ध हो सकेगी।

उत्तर 13.

सेवा में,

जिलाधिकारी महोदय

अ.ब.स. जिला

अ.ब.स. नगर।

दिनांक : 03/04/2018

विषय : जिला अधिकारी को पत्र अनाधिकृत मकान बनाए जाने के सम्बन्ध में।

मान्यवर,

विवश होकर कहना पड़ता है कि इन दिनों महानगर की प्रमुख गलियों से होकर जाना असहज हो गया है। कारण यह है कि गलियों पर जहाँ-तहाँ लोगों द्वारा कब्जा कर लिया गया है और उस पार अनाधिकृत मकान बनाए जा रहे हैं।

To know about more useful books for class-9 click here

कहीं सड़कों पर रेत की ढेर पड़ी हुई है तो कहीं ईट की पंक्तियाँ सजी हुई हैं। कई जगह सड़कों पर पान-तम्बाकू बेचने वालों ने ईट की दीवारें उठाकर दुकानें बना रखी हैं। इन सब कारणों से सड़क से गुजरने वाले यात्रियों को दुर्घटना का शिकार भी होना पड़ता है।

अत: आपसे नम्र निवेदन है कि नगर की अनाधिकृत बने मकानें को हटाने के लिए जल्द से जल्द आदेश दें ताकि सभी लोग अमन-चैन से जीवन व्यतीत कर सकें।

इसके लिए हम सब आभारी रहेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

अ.ब.स.

अ.ब.स. मोहल्ला

अ.ब.स. नगर

अथवा

सेवा में,

मुख्य संपादक महोदय

अ.ब.स. समाचारपत्र

अ.ब.स. नगर।

दिनांक: 03 अप्रैल, 2018

विषय—बिजली की कटौती से उत्तपन्न समस्याओं के सम्बन्ध में।

मान्यवर,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान अपने इलाके में बिजली संकट से उत्पन्न कठिनाइयों की ओर दिलाना चाहता हूँ। आजकल हमारी सी.बी.एस.ई. बोर्ड की दसवीं की परीक्षाएँ चल रही हैं। ऐसी स्थिति में बार-बार बिजली चले जाने से हम छात्रों को पढ़ाई करने में बहुत परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बिजली की इस आँख-मिचोली से हम छात्रों की पढ़ाई में व्यवधाना पड़ता है। इसका हमारे परीक्षा-परिणाम पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा। बिजली जाने का कोई निश्चित समय भी नहीं है, जब भी हम छात्रों के पढ़ने का समय होता है तो बिजली चली जाती है।

आपसे अनुरोध है कि हम छात्रों के हित को ध्यान में रखते हुए इस समाचार को अपने लोकप्रिय समचार पत्र के मुख्यपृष्ठ पर जगह देकर संवंधित अधिकारी का ध्यान आकृष्ट करने की कृपा करें। इससे हमारी समस्या शीघ्र दूर हो सकेगी।

इसके लिए हम सब आभारी रहेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

अ.ब.स.

अ.ब.स. मोहल्ला

अ.ब.स. नगर

उत्तर 14.

हरिया : महेन्द्र! कल रात को नरेन्द्र मोदी का राष्ट्र के नाम सन्देश सुना।

महेन्द्र : हाँ, सुना, मजा आ गया। अचानक 500 और 1000 के नोट बन्द करके कालाधन इकट्ठा करने वालों की जड़ हिला दी।

हरिया : ठीक है पर इसका सबसे अधिक प्रभाव पाकिस्तान पर पड़ेगा। अब वह आतंकवादियों को शरण नहीं दे पाएगा।

महेन्द्र : हाँ प्रकाश, सही कह रहे हो क्योंकि पाकिस्तान का आतंकी संगठन 500 और 1000 के नकली नोटों के द्वारा हमारे युवाओं को आतंकवादी बनाते थे। पर अब धन न होने से उनके मंसूबे ध्वस्त हो जाएँगे।

हरिया : ठीक कह रहे हो परन्तु हमारे देश के नेता तो बौखला रहे हैं क्योंकि काले धन से चुनाव लड़ने की उनकी तैयारी धरी रह गई।

महेन्द्र : सही बात है वैसे कुछ अच्छे परिवर्तन करने के लिए थोड़ी बहुत परेशानी तो उठानी पड़ती है। बिना कष्ट आनंद नहीं मिलता।

हरिया : कोई बात नहीं देश-हित में हम नोटबंदी की परेशानी तो उठा ही सकते हैं। धन्यवाद! (दोनों एक साथ)

OSWAAL BOOKS LEARNING MADE SIMPLE

अथवा

सुशील : क्या तुम्हें मालूम है कि हमारे प्रधान मंत्री जी ने स्वच्छ भारत अभियान चलाया है?

सुमन : हाँ, मैंने उसके बारे में सुना है। और आज हमरे विद्यालय में भी इसके बारे एका सभा का आयोजन किया जाएगा।

सुशील : हाँ, सभा के बाद हमलोग अपने विद्यालय को एक पूर्ण स्वच्छ विद्यालय बनाना चाहते हैं।

सुमन : अच्छा, क्या हमलोगों को भी उसमें भाग लेना है?

सुशील : हाँ, प्रत्येक विद्यार्थी को इसमें योगदान करना है।

सुमन : वह कैसे?

सुशील : हमें अपने आस-पास की जगहों की सफाई की देखभाल करनी है।

सुमन : ठीक है, मैं अपनी कक्षा में सहपाठियों से सफाई रखने के लिए कहूँगा।

सुशील : केवल दूसरों को ही नहीं, स्वयं भी सफाई पर ध्यान देना होगा।

सुमन : हाँ! आज से मैं अपने बैग अपने जूते की सफाई स्वयं करूँगा।

सुशील : सही कहते हो। कक्षा में ध्यान रखना पड़ेगा कि किसी प्रकार की बेकार चीजें इधर-उधर न बिखरी हुई हों।

सुमन : चलो, अब चलते हैं। नमस्ते!

सुशील : नमस्ते!

●●

OSWAAL BOOKS
LEARNING MADE SIMPLE

To know about more useful books for class-9 click here

केन्द्रीय विद्यालय संगठन
[जम्मू संभाग]
संत्रात परीक्षा 2018–19
विषय : हिन्दी–अ
कक्षा–9
(हल प्रश्न–पत्र)

समय : 3 घण्टे] **[पूर्णांक : 80 अंक**

विद्यार्थियों के लिए सामान्य निर्देश :

(1) इस प्रश्नपत्र में चार खंड क, ख, ग और घ हैं।

(2) चारों खंड़ो के प्रश्नो के उत्तर देना अनिवार्य है।

(3) यथा संभव प्रत्येक खंड के प्रश्नों के उत्तर क्रमशः दीजिए।

(4) लेख सुंदर और सुपाठ्य होना चाहिए।

खण्ड–'क'

अपठित बोध **(15 अंक)**

1. निम्नलिखित गदयांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्नों के सही उत्तर दीजिए : **8**

असफलता समझदार को भी तोड़ देती है। असफल इंसान इच्छाशक्ति आत्मविश्वास, सही दिशा आदि सब खो बैठता है। लेकिन जो इन्हें कसकर पकड़े रहता है, वह हार को जीत में बदलने का सामर्थ्य रखता है। एक ग्रीक लेखक के अनुसार जो हम अंदर से हासिल करते हैं, वह बाहर की असलियत को बदल देता है। अंधेरे उजाले की तरह हार जीत का दौर भी चलता रहता है। पर न अंधेरा चिरकालीन होता है ओर न उजाला। घड़ी का बराबर आगे बढ़ना हममें यह आशा भर देता है कि समय कितना भी उलटा क्यों न हो, रूका नहीं रह सकता। किसी विद्वान का कथन है कि आदमी की सफलता उसकी ऊंचाई तक चढ़ने में नहीं अपितु इसमें है कि नीचे तक गिरने के बाद वह फिर से कितना उछल पाता है। असफलता से हमें यह प्रेरणा मिलती है। जिससे हम लक्ष्य तक पहुँचने को नए रास्ते खोजते हैं। हममें कुछ करने की कामना जागती है। असफलता को नकारात्मक भूल मानता है, क्योंकि उसी में सफलता का मूल छिपा है। उसी से बाधाओं से जूझने की शक्ति मिलती है। दुर्भाग्य और हार छदम वेश में वरदान ही होते हैं। असफलता प्रकृति की वह योजना है जिससे की शक्ति मिलती है। दुर्भाग्य और हार छदम वेश में वरदान ही होते हैं। असफलता प्रकृति की वह योजना है जिससे आदमी के दिल का कूड़ा–करकट जल जाता है और वह शुद्ध हो जाता हैं। तब वह उसे उड़ने के लिए नए पंख देती है।

1. हार को जीत में बदलने का सामर्थ्य कौन रखता है? **2**
2. किसी विद्वान ने क्या कहा है? **2**
3. बुद्धिमान भी विफलता के क्षणो से दुखी क्यों हो उठता है? **2**
4. व्यक्तियों की सफलता की कसौटी क्या है? **1**
5. 'नकारात्मक' शब्द का विलोम शब्द क्या है? **1**

2. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **7**

मोतिया ने मुँह फुलाकर कहा–
"अबे गुलाब, तेरे पास है न मेरे जैसी सुगंध
न सफेदी न कोमलता,
फिर भी दुनियावाले हैं कि तुझ पर ही नजरें बिछाए हैं।
गुलाब ने खिलखिलाते हुए कहा, भैया मुँह मत फुलाओ,
जरा मेरे नीचे तजर डालो। मोतिया ने पलकें झुकाई
तो सिहर उठा–काँटे ही काँटे

To know about more useful books for class-9 click here

तभी गुलाब ने कहा–"अब जरा अपने नीचे देखो।
मोतिया ने देखी–अपने नीचे मखमल से पत्तों की सेज!
मोतिया शरमाया, तो गुलाब ने नजाकत से कहा–
"आभा वहीं बिछती है
जहाँ काँटों के ऊपर मधुर मुस्कान है।
रौनक है, ताजगी है"।

(i) मोतिया, गुलाब से अधिक सुंदर, सुगंधित, कोमल होते हुए भी मुँह फुलाए क्यों है? **2**

(ii) 'गुलाब का खिलखिलाना' किसका सूचक है– **1**

(iii) मखमल–सी पत्तों की सेज का आशय क्या है? **2**

(iv) दुनिया सम्मान और प्यार किसको देती है? **1**

(v) कविता का संदेश क्या है? **1**

खण्ड–'ख'

3. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए— **1 × 4 = 4**

(क) "पराजय" शब्द में से उपसर्ग और मूल शब्द अलग कीजिए।

(ख) परि उपसर्ग लगा कर दो शब्द लिखिए।

(ग) "चमकीला" शब्द में से मूल शब्द और प्रत्यय अलग कीजिए।

(घ) ईय प्रत्यय लगा कर दो शब्द बनाएँ।

4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए— **1 × 3 = 3**

(क) समस्त पदों का विग्रह कर समास का नाम बताएँ :

पाठशाला पंचानन नीलकंठ

5. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए— **1 × 4 = 4**

(क) बचपन की स्मृतियों में एक विचित्र सा आकर्षण होता है?
(अर्थ के आधार पर वाक्य भेद बताइए)

(ख) वह गायब हो गया। (विस्मयवाचक वाक्य में बदलिए)

(ग) अर्थ के आधार पर वाक्य के कितने भेद हैं?

(घ) तुम्हारा जूता फटा है। (प्रश्नवाचक में बदलिए)

6. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में निहित अलंकार बताएँ : **1 × 4 = 4**

(क) मेघ आए बड़े बन ठन के संवर के।

(ख) नदियाँ जिन की यशधारा सी
बहती हैं अब भी निशि–बासर।

(ग) रघुपति राघव राजा राम।

(घ) उत्प्रेक्षा अलंकार का उदहारण लिखें।

खण्ड–'ग'

7. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिये— **2 + 2 + 1 = 5**

फोटो खिंचाना था तो ठीक जूते पहन लेते या न खिंचाते। फोटो न खिंचाने से क्या बिगड़ता था। शायद पत्नी का आग्रह रहा हो और तुम 'अच्छा, चल भई' कह कर बैठ गए होगे। मगर यह कितनी बड़ी ट्रेजडी है कि आदमी के पास फोटो खिंचाने को भी जूता न हो। मैं तुम्हारी यह फोटो देखते–देखते, तुम्हारे क्लेश को अपने भीतर महसूस करके जैसे रो पड़ना चाहता हूँ, मगर तुम्हारी आँखों का यह तीखा दर्द भरा व्यंग्य मुझे एकदम रोक देता है।

(1) लेखक किसे और क्या सुझाव दे रहा है?

(2) लेखक ने किस बात को ट्रेजडी कहा है?

(3) प्रेमचंद का फोटो देखकर लेखक क्या अनुभव करता है?

To know about more useful books for class-9 click here

8. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए— **2 × 4 = 8**

(1) एक कुत्ता और एक मैना पाठ पढ़कर आप रविन्द्रनाथ की किस विशेषता से प्रभावित हुए?

(2) लेखिका के जन्म पर उसकी खातिर क्यों हुई? मेरे बचपन के दिन पाठ के आधार पर बताइए।

(3) बालिका मैना के चरित्र की विशेषताएँ 'नाना साहब की पुत्री देवी मैना को भस्म कर दिया गया' पाठ के आधार पर लिखे।

(4) दो बैलों की कथा के आधार पर बताएँ कि कांजीहाउस में पशुओं की हाजिरीक्यों ली जाती होगी?

9. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **2 + 2 + 1 = 5**

और पैरों के तले है एक पोखर,
उठ रहीं इसमें लहरियाँ,
नील तल में जो उगी है घास भूरी
ले रही वह भी लहरियाँ।

एक चाँदी का बड़ा सा गोल खम्भा
आँख को है चकमकाता
हैं कई पत्थर किनारे
पी रहे चुपचाप पानी
प्यास जाने कब बुझेगी!

चुप खड़ा बगुला डुबाए टाँग जल में
देखते ही मीन चंचल
ध्यान निद्रा त्यागता है,
चाट दबाकर चोंच में
नीचे गले में डालता है।

(1) पोखर में किसका प्रतिबिम्ब दिखाई दे रहा है? वह कैसा लग रहा है?

(2) पत्थरों को प्यासा कहने के पीछे क्या कारण है?

(3) बगुला किसे देख अपना ध्यान भंग करता है?

10. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए— **2 × 4 = 8**

(1) इस संसार में सच्चा संत कौन कहलाता है?

(2) 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

(3) हर जगह दक्षिण दिशा होने से कवि का क्या अभिप्राय है?

(4) ग्रामश्री कविता के आधार पर बताइए वसुधा रोमांचित सी क्यों लगती है?

11. पूरक पुस्तक के आधार पर उत्तर दें— **4**

माटीवाली के पास अपने अच्छे या बुरे भाग्य के बारे में ज्यादा सोचने का समय क्यों नहीं था?

अथवा

शंकर जैसे लड़के या उमा जैसी लड़की—समाज को कैसे व्यक्तित्व की जरूरत है? तर्क सहित उत्तर कीजिए।

खण्ड–'ब'

12. विद्यालय में पीने के पानी की कमी के सम्बन्ध में प्राचार्य को प्रार्थना पत्र लिखें। **5**

अथवा

अपने विद्यालय की विशेषताएँ बताते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए।

13. संकेत बिन्दुओं के आधार पर किसी एक विषय पर निबंध लिखिए **10**

(1) मेरे सपनों का भारत —भारत गौरवशाली बने — भारत का गौरवशाली अतीत — सोने की चिड़िया — भारत की वर्तमान समस्या—उपाय

To know about more useful books for class-9 click here

(2) विज्ञान की अद्‌भुत खोज कंप्यूटर – विज्ञान का चमत्कार – कंप्यूटर की आवश्यकता – अद्‌भुत क्रांति – कंप्यूटर का वर्णन –उपयोगिता – निष्कर्ष

(3) विज्ञापनों का जनजीवन पर प्रभाव-विज्ञापन का अर्थ-विज्ञापन का प्रभाव-विज्ञापन से लाभ-विज्ञापन भारतीय संस्कृति के लिए घातक

14. नोटबंदी से प्रभावित दो ग्रामीणों के बीच हुए संवाद लिखिए। **5**

अथवा

आपने अपना गृह कार्य नहीं किया है। इसका कारण बताते हुए शिक्षक के साथ होने वाला संवाद लिखिए।

●●

OSWAAL BOOKS
LEARNING MADE SIMPLE

To know about more useful books for class-9 click here

उत्तरमाला

खण्ड–क

(अपठित बोध एवं मुक्त पाठ)

उत्तर 1.

1. जो इंसान इच्छाशक्ति, आत्माविश्वास, सही दिशा आदि को कसकर पकड़े रहता है, वह हार को जीत में बदलने की सामर्थ्य रखता है।
2. किसी विद्वान ने कहा है कि आदमी की सफलता उसकी ऊँचाई तक चढ़ने में नहीं अपितु इसमें है कि नीचे तक गिरने के बाद वह फिर से कितना उछला पाता है।
3. बुद्धिमान भी विफलता के क्षणों में दुखी इसलिए हो उठता है क्योंकि वह इच्छाशक्ति, आत्मविश्वास, सही दिशा आदि सब खो बैठता है।
4. व्यक्तियों की सफलता की कसौटी असफलता है। असफलता से आदमी के दिल का कूड़ा–करकट जल जाता है और वह शुद्ध हो जाता है। उसे अपने गुणों की पहचान कर मूल्यांकन करने का अवसर मिलता है।
5. 'नकारात्मक' शब्द का विलोम 'सकारात्मक' है।

उत्तर 2.

1. मोतिया, गुलाब से अधिक सुंदर, सुगंधित, कोमल होते हुए भी इसलिए मुँह फुलाए है क्योंकि सब उसके गुणों की उपेक्षा कर गुलाब के सौंदर्य से अधिक आकर्षित हो रहे हैं।
2. 'गुलाब का खिलखिलाना' मोतिया के मुँह फुलाने पर व्यंग्य का सूचक है।
3. मखमल-सी पत्तों की सेज का आशय आरामभरी जिंदगी से है। यहाँ मानवीकरण किया गया है।
4. जो काँटों से युक्त जीवन में गुलाब के समान हँसते रहते हैं दुनिया उसे मान-सम्मान देती है।
5. जीवन की खुशबू कठोर और कष्टप्रद मेहनत के बाद ही प्राप्त होती है।

खण्ड–ख

उत्तर 3.

(क) उपसर्ग – परा, मूल शब्द – जय
(ख) परि + श्रम – परिश्रम, परि + नाम = परिणाम
(ग) मूल शब्द – चमक, प्रत्यय – ईला
(घ) मानव + ईय = मानवीय, भारत + ईय = भारतीय

उत्तर 4.

(क) पाठशाला – तत्पुरूष समास,
पंचानन – द्विगु / बहुब्रीहि
नीलकंठ–बहुब्रीहि

उत्तर 5.

(क) प्रश्नवाचक वाक्य (वाक्य में प्रयुक्त चिह्न के आधार पर)
विधानवाचक वाक्य (वाक्य के अर्थ के आधार पर)
(ख) अरे! वह गायब हो गया।
(ग) अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं।
(घ) क्या तुम्हारा जूता फटा है?

उत्तर 6.

(क) मानवीकरण अलंकार
(ख) उपमा अलंकार
(ग) अनुप्रास अलंकार
(घ) सोहत ओढ़ै पीत पट स्याम सलोने गात।
मनौ नीलमनि सैल पर आतप परयो प्रभात॥

To know about more useful books for class-9 click here

खण्ड–ग

उत्तर 7.

1. लेखक प्रेमचंद को फोटो खिंचवाने के लिए ठीक से जूते पहनने या फोटो न खिंचवाने का सुझाव दे रहा है।
2. प्रेमचंद जैसे महान आदमी के पास फोटो खिंचाने के लिए जूते का न होना, लेखक के अनुसार ट्रैजडी वाली बात है।
3. प्रेमचंद की फोटो देखकर लेखक उनके अंदर के क्लेश को अनुभव करना चहता है पर उनकी आँखों में निहित सामाजिक भेदभाव के प्रति व्यंग्य के देखकर असहज-सा हो जाता है।

उत्तर 8.

1. एक कुत्ता और मैना पाठ को पढ़ने के बाद मैं रवीन्द्रनाथ टैगोर की निम्नलिखित विशेषताओं से प्रभावित हूँ :
   रवीन्द्रनाथ प्रकृति और पशु-पक्षी प्रेमी थे। वे एक संवेदनशील व्यक्ति थे। संवेदनशील होने के साथ वे एक सहृदय कवि भी थे जिसका प्रमाण उनके द्वारा लँगड़ी मैना को आधार मानकर लिखी गई कविता है। उनके दर्शनार्थी प्रसंग से उनके हास्य प्रिय होने का भी पता चलता है।
2. कन्या के रूप में लेखिका (महादेवी जी) का जन्म उस परिवार में कई पीढ़ियों के पश्चात् हुआ था। महादेवी जी के बाबा ने दुर्गा-पूजा करके कन्या माँगी थी इसलिए उनके जन्म के समय सब उत्साहित थे और उनकी बहुत खातिर की गई।
3. कानपुर ने नाना साहब की पुत्री बालिका मैना की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं :
   (i) **भावुक स्वभाव :** मैना बहुत सुन्दर थी। उसका स्वभाव आकर्षक और भावुक था। वह अपने जन्म स्थान को किसी तरह बचाना चाहती थी।
   (ii) **तर्कशील :** मैना तर्क देने में निपुण थी। अपने महल की रक्षा के लिए उसने सेनापति 'हे' से कहा कि इस जड़ पदार्थ मकान ने कोई अपनाध नहीं किया है, जिसे आप तोड़ना चाहते हैं।
   (iii) **साहसी :** मैना साहसी थी, अंग्रेजों के अत्याचारों से सारा देश कराह रहा था, वह डरी नहीं जब सेना नाना के महल को नष्ट करने आई थी, उसने डटकर मुकाबला किया।
4. दो बैलों की कथा पाठ में वर्णित काजीहाउस पशुओं की एक प्रकार की जेल थी। उसमें प्रतिदिन पशुओं की हाजिरी पशुओं की संख्या पर नजर रखने के लिए ली जाती होगी। इससे यह जानने में सुविधा होती थी कि किसी की मृत्यु तो नहीं हो गई या कोई पाशु भाग तो नहीं गया।

उत्तर 9.

1. पोखर में सूर्य की किरणों का प्रतिबिम्ब दिखाई दे रहा है। लहरों के हिलने-डुलने से वह चाँदी के गोल खम्भे के समान लग रहा है।
2. पोखर के किनारे पड़े पत्थर सदियों से शांत और निश्चल भाव से पानी में उब-डूब कर रहे हैं। उनका एक भाग तो पानी में हमेश डूबा ही रहता है जिन्हें देखकर कवि कल्पना करता है कि मानो ये पानी पी रहे हों तथा पता नहीं इनकी प्यास कब बुझेगी।
3. बगुला चंचल मछलियों को देखकर अपना ध्यान भंग करता है। उन्हें चोंच में दबाकर चट कर जाता है।

उत्तर 10.

1. इस संसार मे सच्चा संत वही होता है जो पक्षपात से रहित होता है। उसे किसी पक्ष विशेष की चिंता नहीं होती है बल्कि वह निष्पक्ष होकर अपने काम में तल्लीन रहता है। वह सांप्रदायिक भेदभाव और मोह-माया से मुक्त होकर सभी परिस्थितियों में समभाव से प्रभु की भक्ति में लीन रहता है।
2. 'बच्चे काम पर जा रहे हैं' इस कविता का उद्देश्य उन सामाजिक-आर्थिक विडंबनाओं का वर्णन करना है जिनके कारण कुछ बच्चे बचपन में ही खेल-कूद और जीवन की उमंग से वंचित होकर अर्थोपार्जन के लिए काम करने लगते हैं। वास्तव में यह स्थिति भयावह है जहाँ बच्चों को शिक्षा प्राप्ति के लिए श्रम करना चाहिए वहाँ वे पेट भरने के लिए काम कर रहे हैं।
3. वर्तमान आतंक, भय, अविश्वास और अराजकता के माहौल में कवि हर जगह अपने को असुरक्षित पाता है। हिंसा और आंतक इतना विस्तार पा चुका है कि अब मौत की एक दिशा नहीं है बल्कि संसार के हर एक कोने में मौत अपना डेरा जमाए बैठी है। कवि सभ्यता के विकास की इसी खतरनाक स्थिति के कारण कह रहा है कि आज हर जगह दक्षिण दिशा बन गई है।
4. ग्रामश्री कविता में कवि ने गंगा के किनारे के खेत का मनोरम चित्रण किया है। कवि कहते हैं कि गाँव के खेतों में चारों तरफ दूर-दूर तक हरियाली फैली हुई है। सूर्य की किरणें जब खेतों में फैली हरियाली पर पड़ती तो हरियाली चमक पड़ती है। झुका हुआ नीला आकाश अति सुंदर लगता है। इन मनोरम परिस्थितियों में कवि को पूरी धरती रोमांचित-सी लगती है।

उत्तर 11.

जब जीवन पेट की समस्या से ग्रसित हो तथा रोटी की चिंता में रात-दिन एक समान लगे तब भाग्य की बात बहुत दूर चली जाती है। माटीवाली भी अपनी आर्थिक और पारिवारिक उलझनों में उलझी, निम्न स्तर का जीवन जीने वाली सामान्य-सी महिला थी। अपना तथा अपने पति का पेट पालना ही उसकी सबसे बड़ी समस्या थी सुबह उठकर माटाखाना जाना और दिनभर उस मिट्टी को बेचना। इसी में

To know about more useful books for class-9 click here

उसका सारा समय बीत जाता था। अपनी इसी दिनचर्या को वह नियति मानकर चले जा रही थी। इस विषम परिस्थिति में माटीवाली के पास अच्छे और बुरे भाग्य के बारे में ज्यादा सोचने का समय नहीं रहता था।

अथवा

'रीढ़ की हड्डी' कहानी 'श्री माथुर' द्वारा लिखित समाज की सच्ची तस्वीर को वर्णन करती एक सशक्त कहानी है। वास्तव में समाज में आज उमा जैसे स्पष्टवादिनी तथा उच्च चरित्र वाली लड़की की परम आवश्यकता है। इस प्रकार की लड़कियाँ ही गोपाल प्रसाद जैसे दोहरी मानसिकता रखने वाले, स्वार्थी और दुर्जन लोगों को सही रास्ता दिखा सकती है। इसके विपरीत शंकर जैसे लड़के समाज के लिए कलंक है। शंकर जैसे व्यक्ति समाज को भ्रष्ट कर दूषित कर देते हैं। इससे समाज के साथ राष्ट्र का भी अपमान होता है।

खण्ड–घ

उत्तर 12.

सेवा में,

प्राचार्य महोदय

अ.ब.स. विद्यालय

अ.ब.स. नगर।

विषय–विद्यायालय में पीने की पानी की कमी के संदर्भ में पत्र।

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं कक्षा नौ 'अ' का छात्र हूँ। हमारे विद्यालय में पिछले कई दिनों से पीने की पानी की समस्या चल रही है। नलों में पानी बहुत कम आता है। कई बार तो बिलकुल पानी नहीं आता है। इस कारण विद्यार्थियों को बाहर से पानी की बोतलें खरीदनी पड़ती है।

आपसे प्रार्थना है कि आप शीघ्र पानी की उचित व्यवस्था करने का आदेश दें ताकि हमारी पानी की समस्या दूर हो सके।

हम सब इसके लिए आभारी रहेंगे।

सधन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य

अ.ब.स

कक्षा–नौ 'अ'

दिनांक–02/04/2018

अथवा

परीक्षा–भवन

अ.ब.स. विद्यायालय

अ.ब.स. नगर

दिनांक–20/04/2018

प्रिय मित्र अ.ब.अ.,

नमस्ते।

मैं यहाँ कुशल हूँ विश्वास है कि आप भी सकुशल होंगे। आपने अपने पत्र में मेरे विद्यालय के विषय मे जिज्ञासा व्यक्त की है।

मित्र! मेरा विद्यालय नगर के प्रतिष्ठित विद्यालयों में श्रेष्ठ है। विद्यालय में बहुत बड़ा खेलने का मैदान है। सभी कक्षाएँ हवदार हैं। विद्यालय में प्रायोगिक कक्षाओं के लिए लैब भी बनी हैं। मेरे विद्यालय का परीक्षा परिणाम लगभग शत–प्रतिशत रहता है। निर्धन छात्रों को प्रतिवर्ष छात्रवृत्ति भी उपलब्ध कराई जाती है। मेधावी छात्रों का प्रतिवर्ष सम्मान भी किया जाता है। खेल–कूद में भी हमारा विद्यालय अपन नगर में अव्वल आता है।

विशेष अगले पत्र में। परिवार में सबको यथायोग्य अभिवदन।

आपका प्रिय मित्र

अ.ब.स.

कक्षा–नौ

To know about more useful books for class-9 click here

उत्तर 13.

क. मेरे सपनों का भारत

भारत का अपना एक गौरवशाली इतिहास रहा है। इस देश का अतीत सदियों से आकर्षक, पावन और स्मरणयोग्य है। यहाँ पर अवतरित ऋषि-मुनियों ने अपनी यशोगाथा से भारत के मस्तक को सदा देदीप्यमान रखा है। यहाँ की आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति इतनी सुदृढ़ रही है कि इसे सोने की चिड़िया कहकर सम्मान दिया जाता था। प्राचीन भारत की पावन धरती अपनी प्राकृतिक सुंदरता और भव्यता के कारण देवभूमि की उपाधि से विभूषित रही है।

मेरे सपनों का भारत वो भारत है जो इससे भी अधिक गति से प्रगति करे और जल्द ही विकसित देशों की सूची में शामिल हो। भारत ने पिछले कुछ दशकों में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, शिक्षा और अन्य क्षेत्रों में बहुत विकास देखा है। मैं एक पूरी तरह से विकसित देश के रूप में भारत का सवना देखता हूँ, जो न केवल उपर्युक्त क्षेत्रों में उत्कृष्टता हासिल करेगा बल्कि अपनी सांस्कृतिक विरासत को भी सुरक्षित रखते हुए विश्व का मार्गदर्शन करेगा। वर्तमान भारत में कुछ ज्वलंत समस्याएँ निम्नलिखित हैं जिनका निदान किए बिना भारत का पूर्ण विकास सम्भव नहीं है–

शिक्षा और व्यवसाय—मैं एसे भारत का सपना देखता हूँ जहाँ हर नागरिक शिक्षित होगा और हर किसी को योग्य व्यवसाय के मौके मिल सकेंगे। शिक्षा मानव का मौलिक अधिकार है शिक्षित और प्रतिभाशाली व्यक्तियों से भरे राष्ट्र के विकास को कोई रोक नहीं सकता।

जाति और धर्म—मेरे सपनों का भारत एक ऐसा भारत होगा जहाँ लोगों को उनकी जाति या धर्म के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा। जाति और धर्म से ऊपर उठकर किया गया कार्य ही राष्ट्र को सबल और समृद्ध करने में सहयोगी बनेगा।

औद्योगिक और तकनीकी विकास—भारत ने पिछले कुछ दशकों में औद्योगिक ओर तकनीकी विकास दानों को देखा है। हालाँकि यह विकास अभी भी अन्य देशों के विकास के समान नहीं है। मेरे सपनों का भारत तकनीकी क्षेत्र के साथ-साथ अन्य क्षेत्रों में तेजी से प्रगति करेगा और सबका सिरमौर बनेगा।

भ्रष्टाचार—देश में बहुत भ्रष्टाचार है और यह हर दिन तेजी से बढ़ रहा है। आम आदमी भ्रष्ट राजनेताओं के हाथों पीड़ित है जो केवल अपने स्वार्थी उद्देश्यों को पूरा करने में रुचि रखते हैं। मेरे सपनों का भारत भ्रष्टाचार से मुक्त होगा। यह एक ऐसा देश होगा जहाँ लोगों की भलाई सरकार का एकमात्र उद्देश्य होगा।

भारत एक बहु-सांस्कृतिक, बहुभाषी और बहु-धार्मिक समाज का सशक्त उदाहरण है। अत: मेरे सपनों का भरत एक ऐसा स्थान होगा जहाँ लोग स्वस्थ, सुरक्षित और शांति का अनुभव करते हुए अच्छे जीवन की गुणवत्ता का आनंद लेंगे।

अथवा

ख. विज्ञान की अद्भुत खोज-कंप्यूटर

आज का विश्व विज्ञान की नींव पर टिका है। मनुष्य ने विज्ञान के द्वारा अनेक शक्तियाँ, सुख-सुविधाएँ तथा चमत्कारी उपकरणों का आविष्कार किया है जिसमें कम्प्यूटर अत्यधिक महत्त्वपूर्ण और अद्भुत है। यह ऐसा इलेक्ट्रॉनिक मस्तिष्क है जिसने अपनी अनगिनत विशेषताओं के बल पर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में दस्तक दी है।

विज्ञान और इजीनियरिंग के क्षेत्र में गणित की जटिल तथा विस्तृत गिनतियाँ, विमानों, पनडुब्बियों, शत्रु के निश्चित ठिकानों पर सटीक हमला करने वाली मिसाइलें कम्प्यूटर द्वारा ही संचालित होती हैं। सूचनाएँ एकत्र करने में कम्प्यूटर का व्यापक रूप में प्रयोग हो रहा है। चिकित्सा के क्षेत्र कम्प्यूटरीकृत मशीनों के द्वारा चिकित्सा विज्ञान कम्प्यूटरीकृत नई ऊँचाइयों को छू रहा है।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आज कम्प्यूटर का उसकी उपयोगिता के कारण व्यापक रूप से प्रयोग हो रहा है। रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों पर कम्प्यूटर का प्रयोग आरक्षण आदि के लिए किया जा रहा है। चिकित्सा के क्षेत्र में कम्प्यूटरीकृत मशीनों के आने से रोगी का रोग पहचानने और चिकित्सा करने में सहायता ली जा रही है, बैकों, लेखा विभागों में कम्प्यूटर चमत्कारी भूमिका निभा रहा है। आय-व्यय का ब्यौरा, अनगिनत खातों का हिसाब कम्प्यूटर के माध्यम से ही किया जा रहा है। प्रकाशन के क्षेत्र में कम्प्यूटर के माध्यम से ग्राफिक के रूप में अनेक प्रयोग हो रहे हैं।

मनोरंजन के रूप में कम्प्यूटर आज घर-घर में पहुँच चुका है। अन्तरिक्ष तथा दूर संचार के क्षेत्र में कम्प्यूटर ने क्रान्ति ला दी है। कम्प्यूटर पर इन्टरनेट की सुविधा उपलब्ध होने के साथ ही यह ज्ञान का भण्डार बन गया है। इसके माध्यम से अल्प समय में ही विश्व की कोई भी सूचना, आँकड़े समाचार तुरन्त ही प्राप्त किए जा सकते हैं। छात्रों के लिए यह वरदान साबित हो रहा है। कंप्यूटर के द्वारा वे सुगमता से गूढ़ ज्ञान को प्राप्त करने में सक्षम हो जाते हैं।

आज कम्प्यूटर के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कि जा सकती है। कम्प्यूटर के कारण प्रत्येक क्षेत्र में विकास की गति दस गुणा से लेकर हजार गुणा तक बढ़ी है। इन्हीं सब कारणों से कंप्यूटर को विज्ञान की अद्भुत देन माना जाता है।

घ. विज्ञापनों का जनजीवन पर प्रभाव

किसी भी वस्तु, व्यक्ति या विचार के प्रचार-प्रसार को विज्ञापन कहते हैं। विज्ञापन का उद्देश्य प्रचार-प्रसार करना होता है। जो विज्ञापन श्रोता, पाठक या उपभोक्ता के मन पर जितनी गहरी छाप छोड़ पाता है, वह उतना ही प्रभावी विज्ञापन कहलाता है।

विज्ञापनों का संसार बहुत विस्तृत है। सर्वाधिक विज्ञापन वस्तुओं के होते हैं। साबुन, तेल कपड़े, कम्प्यूटर, टी.वी. आदि के विज्ञापन व्यापारिक विज्ञापन कहलाते हैं। सामाजिक-धर्मिक विज्ञापनों में सामाजिक कार्यक्रमों, महापुरूषों, यज्ञों, समारोहों, कवि-सम्मेलनों

To know about more useful books for class-9 click here

आदि के विज्ञापन आते हैं। शैक्षिक विज्ञापनों में पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं, कोचिंग कक्षाओं, विद्यालयों आदि के विज्ञापन आते हैं। इनके अतिरिक्त सरकारी सूचनाओं, निर्देशों, नियुक्तियों, विवाह आदि के अनेक विज्ञापन होते हैं।

निर्णय को प्रभावित करने में विज्ञापनों की बड़ी भूमिका है। विज्ञापन पनघट की उस रस्सी के समान होते है जो कठोर-से-कठोर पत्थर-बुद्धि पर भी निशान डाल देते हैं। हमारी सारी दनिचर्या विज्ञापनों से प्रभावित होती है। विज्ञापनों का संसार बड़ा मायावी है। यहाँ कुरूप और अभद्र लोगों के भी अति सुन्दर चित्र पेश किए जाते हैं। इनके द्वारा बेकार सामग्री को बहुत प्रभावशाली बनाकर प्रस्तुत किया जाता है। टी.वी. तो चित्रों, शब्दों और संवादों के माध्यम से बहुत बड़ा भ्रमजाल फैला देती है, जैसे एक हफ्ते में कोई फर्राटेदार अंग्रेजी बोलना सीख लेगा। एक महीने में गंजे के बाल उग आएँगे। दो महीने में कोई ठिगना ताड़ का पेड़ हो जाएगा, आदि-आदि। ऐसे भ्रामक विज्ञापनों पर तुरन्त रोक लगनी चाहिए। सरकार को विज्ञापनों की सत्यता की जाँच अवश्य करनी चाहिए और झूठे विज्ञापनदाताओं पर कठोर जुर्माना लगाना चाहिए।

देखने में आया है कि अधिकतर विज्ञापन मसालेदार होते हैं। उनमें आपत्तिजनक साधनों का दुरूपयोग किया जाता है। यहाँ तक कि बीड़ी के विज्ञापन पर भी लड़कियाँ छापी जाती हैं। विज्ञापनदाताओं को चाहिए कि वे अपने लोभ में समाज को गड्ढे में न गिराएँ। वे सामाजिक मर्यादाओं का पूरा ख्याल रखें।

इस प्रकार विज्ञापन द्रुत प्रचार-प्रसार के लिए सेना का काम करते हैं। इनका जनजीवन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। इन्हें भलाई और लाभों के लिए खूब काम में लाना चाहिए किन्तु उनके अमर्यादित उपयोग पर रोक लगनी चाहिए। यदि विज्ञापन अमर्यादित और असत्य होगा तो लोगों का जीवन भी अव्यवस्थित हो जाएगा।

उत्तर 14.

हरिया : महेन्द्र! कल रात को नरेन्द्र मोदी का राष्ट्र के नाम सन्देश सुना।

महेन्द्र : हाँ, सुना, मजा आ गया। अचानक 500 और 1000 के नोट बन्द करके कालाधन इकट्ठा करने वालों की जड़ हिला दी।

हरिया : ठीक है, पर इसका सबसे अधिक प्रभाव पाकिस्तान पर पड़ेगा। अब वह आतंकवादियों को शरण नहीं दे पाएगा।

महेन्द्र : हाँ प्रकाश, सही कह रहे हो क्योंकि पाकिस्तान के आतंकी संगठन 500 व 1000 के नकली नोटों के द्वारा हमारे युवाओं को आतंकवादी बनाते थे। पर अब धन न होने से उनके मंसूबे ध्वस्त हो जाएँगे।

हरिया : ठीक कह रहे हो परन्तु हमारे देश के नेता तो बौखला रहे हैं क्योंकि काले धन से चुनाव लड़ने की उनकी तैयारी धरी रह गई।

महेन्द्र : सही बात है वेसे कुछ अच्छे परिवर्तन करने के लिए थोड़ी बहुत परेशानी तो उठानी पड़ती है। बिना कष्ट आनंद नहीं मिलता।

हरिया : कोई बात नहीं देश-हित में हम नोटबंदी की परेशानी तो उठा ही सकते हैं। धन्यवाद! (दोनों एक साथ)

अथवा

शिक्षक : (छात्र की ओर संकेत करते हुए) रमन! अपना गृह कार्य दिखाओ।

रमन : (डरते हुए) सर! आज मैं गृहकार्य करके नहीं ला सका।

शिक्षक : क्यों?

रमन : कल मेरी माताजी की तबीयत अचानक खराब हो गई थी जिसके कारण मैं अपना गृहकार्य पूरा नहीं कर पाया।

शिक्षक : क्या तुम सच बोल रहे हो?

रमन : हाँ सर! मैं बिल्कुल सच कह रहा हूँ

शिक्षक : कोई बात नहीं। अब कैसी तबियत है माँ की?

रमन : पहले से बहुत सुधार है।

शिक्षक : ठीक है कल, आज और कल दोनों दिन का गृह कार्य पूरा करके अवश्य लाना।

रमन : जी श्रीमान! कल अवश्य दिखा दूँगा। धन्यावाद!

●●

OSWAL BOOKS LEARNING MADE SIMPLE